अलपेन्द्र सिंह झाला, शक्ति, भक्ति और रक्षण के प्रतीक: हनुमान व भैरव जी की शिल्प परंपरा और स्थापत्य में उपस्थिति, कला समीक्षा , खंड 1, *अंक*.1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 11-14*

शक्ति, भक्ति और रक्षण के प्रतीक: हनुमान व भैरव जी की शिल्प परंपरा और स्थापत्य में उपस्थिति

अलपेन्द्र सिंह झाला*

भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना में लोक देवताओं का विशेष महत्व रहा है। विशेषतः ग्रामीण, नगर, पर्वतीय और जनजातीय संस्कृतियों में कुछ देवताओं को लोकाचार और आत्मबल के प्रतीक के रूप में पूजा जाता है। हनुमान और भैरव ऐसे ही दो अत्यंत महत्वपूर्ण देवता हैं जो न केवल भक्ति और शक्ति के प्रतीक हैं, बल्कि लोक रक्षक और विघ्नविनाशक के रूप में भारतीय मानस में गहरे स्थापित हैं।

इनकी मूर्तियाँ केवल धार्मिक आस्था का केंद्र नहीं, बल्कि कला, वास्तुकला और मूर्तिशिल्प की दृष्टि से भी अद्वितीय उदाहरण हैं। मंदिर स्थापत्य, लोक स्थापत्य, नगरद्वार, ग्राम सीमा या श्मशान क्षेत्र–हर स्थान पर इनकी विशिष्ट प्रतिष्ठा होती है। यह लेख विशेष रूप से हनुमान और भैरव जी की शिल्पीय परंपरा, मूर्ति स्वरूपों और स्थापत्य में उनकी विशेष भूमिका का शास्त्रीय और सांस्कृतिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

1. हनुमान जी की शिल्पीय छवियाँ: वीरता, भक्ति और समर्पण का संगम

1.1 प्रतीकात्मकता और मूलभूत स्वरूप

हनुमान जी को 'बजरंगबली', 'मारुति', 'अंजनीपुत्र', 'रामभक्त' और 'संकटमोचन' जैसे अनेक नामों से जाना जाता है। इनकी मूर्तियों में इन सभी गुणों का समावेश पाया जाता है। हनुमान जी की छवि में वीरता, बल, भक्ति और समर्पण का अनूठा संगम होता है।

- गदा हनुमान जी का प्रमुख आयुध है, जो उनकी युद्धशक्ति और रक्षक भाव का प्रतीक है।
- उड़न मुद्रा में बनी मूर्तियाँ उनकी गतिशीलता और दूत के रूप में पहचान दर्शाती हैं।
- रामनाम धारण रूप या वक्षस्थल फाड़कर श्रीराम-सीता का दर्शन कराते हुए मूर्तियाँ अत्यंत लोकप्रिय हैं, जो परम भक्ति का प्रतीक हैं।
- संकट मोचन स्वरूप में हनुमान राक्षसों का वध करते हुए या भक्तों की रक्षा करते हुए चित्रित होते हैं।

1.2 शिल्पीय विविधता

भारतभर में हनुमान जी की मूर्तियों में भिन्न-भिन्न रूप देखने को मिलते हैं। कुछ प्रमुख स्वरूप हैं:

- बालरूप हनुमान: छोटे आकार में, मासूमियत भरी मुद्रा में बैठे या खेलते हुए।
- ध्यानस्थ हनुमान: योग मुद्रा में बैठे, यह तांत्रिक परंपरा में पूजनीय हैं।
- वीर हनुमान: खड़े हुए, गदा लिए हुए, एक पैर भूमि पर और दूसरा हवा में।
- पंखधारी हनुमान: विशेषकर दक्षिण भारत में, गरुड़ जैसे पंखों के साथ उड़न मुद्रा में।

इन शिल्पों में हनुमान जी का शरीर बलिष्ठ, लंबी पूंछ, खुला हुआ मुँह, तीव्र नेत्र और ऊर्जावान मुद्रा में होता है।

अलपेन्द्र सिंह झाला, शक्ति, भक्ति और रक्षण के प्रतीक: हनुमान व भैरव जी की शिल्प परंपरा और स्थापत्य में उपस्थिति,
कला समीक्षा , *खंड* 1, *अंक*.1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 11-14*

1.3 क्षेत्रीय भिन्नताएँ

- उत्तर भारत में लाल रंग से रंजित हनुमान जी की बड़ी मूर्तियाँ प्रचलित हैं, जैसे दिल्ली की झंडेवालान वाली मूर्ति।
- दक्षिण भारत में वे 'वीरमारुति' या 'अनुमन' के रूप में पूजित होते हैं और ब्रह्मचारी रूप में प्रतिष्ठित होते हैं।
- महाराष्ट्र और गोवा में हनुमान जी का "सिंदूरी रूप" अधिक प्रचलित है।

2. भैरव जी की शिल्पीय परंपरा: संहार, तंत्र और रक्षण का स्वरूप

2.1 भैरव का मूलस्वरूप

भैरव, भगवान शिव का उग्र और संहारक रूप हैं। संस्कृत में 'भैरव' का अर्थ है - भय को हरने वाला। इन्हें काल, मृत्यु, तंत्र और गूढ़ ज्ञान का अधिपति माना गया है। इनकी पूजा विशेष रूप से तांत्रिक परंपरा में की जाती है।

- काल भैरव, बटुक भैरव, स्वर्णाकर्षण भैरव, अन्नपूर्णेश भैरव आदि इनके विविध स्वरूप हैं।
- त्रिशूल, कपाल, गदा, डमरु, कृपाण जैसे आयुधों से युक्त होते हैं।
- काले रंग की त्वचा, उग्र नेत्र, खुले बाल और गर्दन में मुण्डमाला इनके शिल्प का प्रमुख अंग हैं।
- कुत्ता इनका वाहन है, जो अव्यक्त शक्तियों के नियंत्रण का प्रतीक है।

2.2 शिल्पीय विशेषताएँ

- भैरव जी की मूर्तियाँ सामान्यतः उग्र और विकराल होती हैं।
- आँखें बड़ी और रक्ताभ होती हैं।
- अर्धनग्न शरीर, भस्म लिप्त और तांत्रिक चिन्हों से युक्त होते हैं।
- कुछ मूर्तियाँ मुद्रा में होती हैं, जहाँ वे ध्यानस्थ दिखते हैं, विशेषतः बटुक भैरव रूप में।

2.3 तांत्रिक परंपरा में प्रतिष्ठा

भैरव जी की मूर्तियाँ अक्सर मंदिरों के श्मशान, अरण्य या सीमांत क्षेत्रों में स्थापित की जाती हैं। तांत्रिक साधक उन्हें 'रक्षक देव' के रूप में मानते हैं। काल भैरव को समय और मृत्यु का स्वामी माना गया है और इनकी उपासना से 'भय', 'रोग' और 'दुर्भाग्य' दूर होता है।

3. मंदिर स्थापत्य में मूर्ति स्थापना: स्थापत्य के नियम और प्रतीकवाद

3.1 हनुमान जी का स्थापत्य स्थान

हनुमान जी को सामान्यतः मंदिरों के प्रवेश द्वार के पास दक्षिण दिशा में स्थापित किया जाता है। इसके पीछे धार्मिक और वास्तुशास्त्रीय दोनों तर्क हैं:

- दक्षिण दिशा यम की मानी जाती है, और हनुमान जी को उस दिशा का रक्षक माना गया है।
- द्वारपाल रूप में वे भक्तों की रक्षा करते हैं और मंदिर के वातावरण को शुद्ध रखते हैं।

अलपेन्द्र सिंह झाला, शक्ति, भक्ति और रक्षण के प्रतीक: हनुमान व भैरव जी की शिल्प परंपरा और स्थापत्य में उपस्थिति,
कला समीक्षा , खंड 1, *अंक.*1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 11-14*

- कई स्थानों पर उनकी विशाल प्रतिमाएँ राजमार्गों, नगरद्वारों और गाँवों की सीमा पर स्थापित की जाती हैं, जो विघ्नों को रोकने का प्रतीक मानी जाती हैं।

3.2 भैरव जी का स्थापत्य स्थान

भैरव जी को मंदिर परिसर की परिधि या परिक्रमा में स्थापित किया जाता है:

- विशेष रूप से श्मशान, अरण्य, नदी किनारे या मंदिर के पीछे स्थान पर।
- काल भैरव को शिव मंदिरों में द्वारपाल के रूप में भी प्रतिष्ठित किया जाता है, जैसे काशी विश्वनाथ मंदिर में।
- कई बार भैरव मंदिर, मुख्य देवालय की रक्षा हेतु स्थापित होते हैं।

3.3 स्थापत्य में दिशा, मुद्रा और शास्त्रीय नियम

मूर्ति स्थापना में वास्तुशास्त्र और आगम शास्त्र के अनुसार दिशा, आयुध, मुद्रा, वाहन आदि का विशेष महत्व होता है:

- दक्षिणमुखी हनुमान: भय नाशक और रक्षक रूप।
- पूर्वमुखी भैरव: तांत्रिक शक्ति का प्रवाह करने वाले।
- बैठी मुद्रा: स्थिरता और ध्यान का प्रतीक।
- खड़ी मुद्रा: सक्रियता और जागरूकता का प्रतीक।

4. ग्रामीण और नगरीय स्थापत्य परंपराएँ

4.1 ग्रामीण परिवेश

गांवों में हनुमान और भैरव की मूर्तियाँ मुख्यतः सीमांत क्षेत्रों, खेतों के पास, नदी किनारे या चौराहों पर पाई जाती हैं। ये वहाँ के ग्राम देवता और रक्षक होते हैं।

- ग्रामीण मूर्तियाँ सामान्यतः मिट्टी, काले पत्थर या सीमेंट से बनी होती हैं।
- इनमें शास्त्रीय सौंदर्य अपेक्षा कम होती है, परंतु शक्ति और श्रद्धा की प्रबल छवि होती है।

4.2 नगरीय स्थापत्य

शहरों में हनुमान और भैरव मंदिर स्थापत्य अधिक कलात्मक और नियमबद्ध होते हैं:

- मंदिरों में गोपुरम, शिखर, मंडप, प्रवेश द्वार आदि होते हैं।
- मूर्तियाँ प्रायः पंचधातु, संगमरमर, या ग्रेनाइट से निर्मित होती हैं।
- मूर्ति निर्माण में शिल्प शास्त्र के नियमों का पालन किया जाता है, जैसे अंशमान, प्राण प्रतिष्ठा, मुद्रा आदि।

5. सांस्कृतिक और शास्त्रीय महत्व

अलपेन्द्र सिंह झाला, शक्ति, भक्ति और रक्षण के प्रतीक: हनुमान व भैरव जी की शिल्प परंपरा और स्थापत्य में उपस्थिति, कला समीक्षा , खंड 1, *अंक.*1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 11-14*

हनुमान और भैरव, केवल पूजनीय देवता ही नहीं, बल्कि भारतीय समाज के रक्षक और प्रेरणास्रोत हैं। उनकी मूर्तियाँ केवल आस्था की प्रतिमाएँ नहीं, बल्कि एक धार्मिक-दर्शनिक संवाद का माध्यम भी हैं।

- हनुमान जी आत्मबल, सेवा और निष्ठा के प्रतीक हैं।
- भैरव जी साहस, संहार और रहस्य के प्रतीक हैं।
- दोनों ही देवताओं की मूर्तियाँ लोककला, मंदिर स्थापत्य, मूर्तिशिल्प और वास्तुशास्त्र की गहराइयों को प्रकट करती हैं।

निष्कर्ष

हनुमान और भैरव, भारतीय धार्मिक चेतना के दो महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। उनकी मूर्तियाँ और मंदिरों में उनकी स्थापत्य परंपरा, भारत की सांस्कृतिक गहराई, तांत्रिक परंपरा, वास्तु और शिल्प कौशल की अद्भुत झलक प्रस्तुत करती हैं। आज भी इनकी पूजा, प्रतिष्ठा और मूर्ति शिल्प समाज में सुरक्षा, शक्ति और भक्ति की भावना को जीवित रखती है।

यह आलेख न केवल धार्मिक आस्था को उद्घाटित करता है, बल्कि भारतीय स्थापत्य, शिल्पशास्त्र और सांस्कृतिक विमर्श को भी समृद्ध करता है। हनुमान और भैरव, हमारी आत्मा के प्रहरी हैं–भक्ति और भयमुक्ति के स्थायी प्रतीक।